आचार्य माणिक्यनन्दि

जीवन-परिचय : आचार्य माणिक्यनन्दि जैन न्यायशास्त्र के महापंडित थे। इनके द्वारा रचित परीक्षामुखसूत्र जैन न्याय का प्रथम सूत्रग्रन्थ है। आचार्य माणिक्यनन्दि नन्दिसंघ के प्रमुख आचार्य और धारा नगरी के निवासी थे। वे व्याकरण और सिद्धान्त के ज्ञाता होने के साथ दर्शनशास्त्र के विशिष्ट विद्वान थे। उस समय धारा नगरी विद्या का केन्द्र बनी हुई थी। बाहर के अनेक विद्वान वहाँ आकर अपनी विद्या का विकास करते थे। वहाँ अनेक विद्यापीठ थे, जिनमें रहकर छात्र विद्याध्ययन करके विद्वान बनते थे। अनेक विद्वान आचार्य जैन धर्म के विकास और प्रचार कार्य में संलग्न रहते थे। माणिक्यनन्दि अत्यन्त प्रतिभाशाली और विभिन्न दर्शनों के ज्ञाता थे। माणिक्यनन्दि गणी रामनन्दि के शिष्य थे, जो भारतीय दर्शन के साथ जैनदर्शन के प्रकांड पंडित थे। इनके शिष्य नयनन्दि थे।

आचार्य माणिक्यनन्दि का समय विक्रम सम्वत् की 10वीं शताब्दी माना जाता है।

रचना -परिचय : माणिक्यनन्दि का एकमात्र ग्रन्थ 'परीक्षामुख' मिलता है।

1. परीक्षामुख : इस ग्रन्थ का नामकरण बौद्धदर्शन के हेतुमुख और न्यायमुख जैसे ग्रन्थों के अनुकरण पर मुखान्त नाम पर किया गया है। परीक्षामुख में प्रमाण और प्रमाणाभास का विशद वर्णन किया गया है। जिस प्रकार दर्पण में हमें अपना प्रतिबिम्ब स्पष्ट दिखलाई पड़ता है, उसी प्रकार परीक्षामुखरूपी दर्पण में प्रमाण और प्रमाणाभास को स्पष्ट रूप से ज्ञात किया जा सकता है। यह ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र की तरह सूत्रात्मक शैली में लिखा गया है। इसके सूत्र सरल, सरस और गम्भीर अर्थवाले हैं। इसकी भाषा प्राञ्जल और सुबोध है। समस्त ग्रन्थ में 218 सूत्र हैं। इस ग्रन्थ पर अनेक टीकाएँ लिखी गयी हैं। जिनमें—प्रभाचन्द्राचार्य की प्रमेयकमलमार्त्तण्ड, लघु अनन्तवीर्य की प्रमेयरत्नमाला विशेष उल्लेखनीय हैं।